शोध मंथन Vol. XII No.I Jan.-March 2021 ISSN: (P)0976-5255 (e)2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

श्रीलंका का कूत्तु जन नाटक में कम्ब रामायण का प्रभाव

डॉ. डब्लू. एम. अमिला दमयन्ति,
व्याख्याता, इन्डियन और एशियन नृत्य विभाग
नृत्य एवं नाटक कला संकाय,
सौन्दर्य कला विश्वविद्यालय, कोलोम्बू, श्रीलंका
Email:amilawijalat@gmail.com

प्राप्तिः 12.02.2021
स्वीकृतः 05.03.2021

सारांश

रामकथा भारतीय संस्कृति का अत्यंत लोकप्रिय विषय रहा है। आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण से लेकर अब तक इस रामकथा का विविध रूप देखने में आए हैं। वाल्मीकि के द्वारा रामायण, रामचरित का आख्यान करनेवाला सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ है तथा इसी आदिग्रन्थ को आधार बनाकर परवर्ती रामायण लिखी गईं जिनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध 'रामचरितमानस' है। इसके लिखे जाने के पश्चात् वाल्मीकि–रामायण की लोकप्रियता अत्यधिक वढ़ी। वह पूरे दक्षिण एशिया में आज भी अत्यन्त लोकप्रिय है तथा उत्तर और दक्षिण भारत की तमाम प्रतिनिधि भाषाओं में उसे वर्णित किया गया है। यदि उत्तर में तुलसी का रामचरितमानस है तो दक्षिण में कम्ब रामायण। कतिपय शतकों से सुविदित रामकथा का काव्य गुणों से समलंकृत कर कवि कम्बन ने भक्ति काव्य 'इरामावतारम्' की रचना की तत् पश्चात् वह ग्रन्थ 'कम्ब रामायण' के नाम से प्रचलित हुआ। कम्ब रामायण में भक्ति रस के प्रतिपादक पद्य और सर्ग अनेक है तथा यह तमिल भाषा से रचित अति मधुर रचना मानी गयी है। श्रीलंका में भी भारत और दूसरे देशों की तरह वाल्मीकि रामायण, कम्ब रामायण तथा श्रीलंका की। अपनी रामकथा से संबंधित लोक कथाओं पर आधारित नाटक प्रस्तुत की जाती है। ये नाटक कई रंग शैलियों के रूप में है। इसके अतिरिक्त रामकथा से जुड़े महाकाव्य, संदेश काव्य, अस्ना (एक पद्य वर्ग), उपन्यास, लोक साहित्य की कहानी, जातक कथा, पट कथा, देखने को मिलती हैं। वास्तव में श्रीलंकाई रामकथा पर आधारित नाटकों की दो परंपराएँ विद्यमान हैं। इन दोनों में से एक सिंहली लोग कर रहे हैं और दूसरा तमिल। दोनों का प्रारम्भ एवं क्रमिक विकास उन वर्गों की संस्कृति पर निर्भर है यह स्पष्ट रूप से देखा भी जा सकता है। श्रीलंका के तमिल लोगों में केवल हिन्दू धर्म मानने वाले ही रामकथा का नाटक करते हैं यह भारतीय रामलीला से मेल खाता है तथा यह कूत्तु नामक जन–नाटक शैली के माध्यम से प्रस्तुत होता है। कूत्तु एक ऐसी नाट्य–शैली है जो श्रीलंका के केवल तमिल लोगों के मध्य में प्रचलित है। इसकी विशेषता यह है कि कूत्तु की रामकथाओं की पट–कथाएँ कम्ब रामायण पर ही आधारित है।

प्रस्तावना

कूत्तु जन–नाटक श्रीलंका के तमिल निवासी ही करते हैं। वे हिन्दू धर्म और संस्कृति पर निर्भर है। समग्र रूप में श्रीलंकाई संस्कृति पर मुख्य रूप से बौद्ध धर्म के वर्णन के प्रभाव का परिणाम है। यह २६०० वर्ष से अधिक पहले से है। श्रीलंका में हिन्दू धर्म की एक लंबी परम्परा है और यह धर्म सबसे पुराना है फिर भी बौद्ध धर्म के बाद आ जाता था। श्रीलंका में जो प्राचीन हिन्दू मंदिर अब तक मिलते हैं उनका समय लगभग २००० वर्ष पुराना है। हिन्दू वर्तमान में श्रीलंकाई जन संख्या के 12% है। जो अधिकतर श्रीलंका के उत्तर पश्चिम, उत्तर, पहाड़ी–क्षेत्र, और पूर्वी जिलों में रहते है। उन्हीं जिलों में से उत्तर तथा पूर्वी जीलों के तमिल जनता रामकथा से संबंधित 'कूत्तु नाटक' प्रस्तुत करती है।

दक्षिण भारत के प्रभाव के कारण श्रीलंका हिन्दू धर्म माननेवाले तमिल जन समाज की संस्कृति शैव और वैष्णव मत पर निर्भर है। यहाँ शिव की प्रतिष्ठा राम के द्वारा करना तथा हनुमान का रुद्रवतार माना जाता है। वास्तव में वे राम ऐसे चरित्र माने गये हैं कि जो यदि विष्णु के अवतार हैं, तथा उनमें शिवभक्ति भी समाहित हो जाती है। मतलब राम जी की भक्ति शिव की परमभक्ति हो गई है। श्रीलंका के तमिल जनता विष्णु और शिव का अनन्य उपासक हैं। इसलिए रामचन्द्र जी के संबंधित उनके मन में ऐसी कल्पनाएँ हैं कि राम जी सदैव विश्णु का अवतार एवं षिव के परमभक्त के रूप में हैं। श्रीलंका के तमिल जन का इस प्रकार दर्शन रामकथा की पट कथाओं में निर्भर कूत्तु नाटक में भी देखा जा सकता है। इसके लिए कम्ब रामायण की प्रेरणाएँ महत्वपूर्ण हो गई हैं। श्रीलंका की कूत्तु आजकल उसका निज युग दिखाई देते हुए भी इसका मूलरूप दक्षिण भारतीयतेरिक्कुट्टु नाटक शैली के निकट प्रदर्शित करता था। परंतु आजकल यह दक्षिण भारत कूत्तु के असमानता दिखाई दे रही है। श्रीलंका के कूत्तु अध्ययन के ऐतिहासिक युग की संबद्धता से स्पश्ट होता है कि दक्षिण भारतीय तमिल साहित्य का प्रभाव कूत्तु की पट कथाओं पर भी दिखता है। उन पट कथाओं का कम्ब रामायण से सुपोशित होना इसके लिए अच्छा उदाहरण है। श्रीलंका के तमिल निवासी अपने संगीत और नृत्य दोनों कलाओं को ईष्वर की कला के रूप में मानते हैं। यहाँ न जानेवाले नृत्य ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है। इसलिए भगवान की कलाओं के माध्यम से आराधना करने की परम्परा के रूप से तमिल संस्कृति में कूत्तु शैली विकसित हो गई। इसमें से रामकथा का कूत्तु नाटक विशेष है। श्रीलंका के तमिलियों के हर हिन्दू धर्म की संस्कृतिक अंगों में विष्णु और शिव का पूजन होता है। परंतु राम की पूजा कहीं भी दिखाई नहीं देती। वहाँ वे लोग राम को केवल विष्णु के दशावतार में से एक मानते हैं। उसी क्रम में कूत्तु की रामकथा के नाटक के राम का चरित्र अच्छी तरह देखा जा सकता है। कूत्तु कलाकार राम को देवता का रूप धारण न करके सदैव वह साधारण मानव की तरह दिखाने के लिए प्रयास करते हैं। वास्तव में रामकथा की कूत्तु नाटकों के हर पटकथा में उस स्थिति सुलभ हो गयी है। इसका कारण यह है कि कम्ब रामायण आश्रित करके पटकथाएँ निर्माण करना। रामकथा पर आधारित कूत्तु नाटक की आकृति, चरित्र चित्रण, सिद्धि, संवाद, पद्य, दृष्टि आदि हर तत्व वाल्मीकि रामायण से विपरित हो गया है।

श्रीलंका के कूत्तु पट कथाकारों को रावण, राम दोनों के जीवन से उदाहरण लेकर अपने जीवन में जुड़ने के लिए कोशिश किया जाता है। उस वक्त वे अपना मनोवृत्ति पूरा करने के लिए कम्ब का अमूल्य रामायण की सहायता ले लेता है। वे शिव भक्त हिन्दू तथा दक्षिण भारतीय प्रभाव आदि हेतु वे अपनी नाटक की कथावस्तु कम्ब रामायण से लेती है।

अतीत में कूत्तु का लिखित पट–कथाएँ नहीं थी। एवं वे केवल महाभारत और कम्ब रामायण की कथाएँ थीं। वे अपनी इच्छाओं के अनुसार आगे बढ़ाई थी। पट कथाकार मछुआरे तथा किसान होते हुए भी वे कलाकार अनपढ़ कहना कठिन है, दूसरी ओर वे अत्यन्त षिव भक्त है। पुराने से आज तक कूत्तु की रामकथा की पटकथाएँ अन्नावियर (Drama master in Kuttu) लोग ही कर रहे हैं। उनको दक्षिण भारत तमिल साहित्य की अनुभव कोविल की पुजारियों से तथा पूर्व जनों से मिला है। वास्तव में रामकथा की कूत्तु नाटक की पट कथाएँ विशिष्ठ है, यह ग्राम्य कलाकार का निर्माण कहना भी कठिन हो गया है। वे इतना कौशल्यपूर्ण है। रामकथा का कूत्तु नाटक पहले कन्ठस्थ रूप से चलाया जाता था। अन्नावियर ने नाटक के अभ्यास के बीच–बीच में ही रामकथा के प्रसंग अपनी इच्छानुसार जुड़ता जाता था। वर्तमान की अन्नावियर के पास भी कम्ब रामायण की पूरी जानकारी है। वास्तव में कूत्तु का अन्नावियर होना और अन्नावियर की भूमिका में रहना इतनी आसानी काम नहीं वह बचपन से किसी अन्नावियर के साथ अभ्यास करना पड़ता है तथा गायन, वादन तथा तमिल साहित्य के ज्ञानी होना चाहिए। वास्तव में कम्ब रामायण की जानकारी अन्नावियर लोगों की परम्परा का विशय हो गई है। कूत्तु का ऐतिहासिक तत्वों की विश्लेषण में से इसके लिए प्रमाण बोध कर सकता है।

वर्तमान में कूत्तु जन नाटक में दो नाटक शैली दिखा सकते है। वे हैं, तेन्मोडी तथा वडमोडि। इमसे विभिन्न कहानियाँ प्रस्तुत है। यह लोक नाटक होते हुए भी एक प्रचलित नाटक शैली के रूप में आगे बढ़ रहा है। रामायण, महाभारत, चीलप्पदिकारन आदि तमिल साहित्य से जुड़े हुई कहानी वड़मोडी शैली से प्रस्तुत किया गया। इन नाटकों में पूजार्थ के ज्यादातर मनोरंजन की अपेक्षा थी। उसके कारण लघु समय में ही वड़मोडी हिन्दू मंदिर के बाहर गाँव के मैदान, खेतों में प्रस्तुत हो रहे थे। वर्तमान में वड़मोडी कूत्तु शैली में विभिन्न कहानियाँ प्रस्तुत हैं। इनमें पूरी कथा ऐतिहासिक और उपदेश रूप में हैं। इनमें कम्ब रामायण आधारित उपकथाएँ अत्यन्त प्रचलित है। कम्ब रामायण की आश्रयदाता वडमोडी शैली के माध्यम से प्रस्तुत कुछ रामायण नाटक का विवरण निम्न प्रकार दिया जा सकता है।

कम्ब रामायणाश्रित नाटक का नाम	**वर्ष**	**कूत्तु दल का नाम व स्थान**
वालिमोच्चम्	1984	वन्दारमुक्लै दृ बॅटिकलेवा कूत्तु दल
रामायणम्	1987	कोक्कड़चोलैदृ बॅटिकलोवा कूत्तु दल
लवकुश	1990	कन्नाकुड़ा कन्नगि अम्मान कोविल की भूमि में
श्री रामर अंजरीयर युद्धम	2001	मुन्नैक्काड मंदिर की भूमि में
राम–सीता	1989	मान्दरै गाँव के कूत्तु दल
राक्नेशन	2003	कोक्कडचोलै विष्णु मंदिर के आँगन
राक्नन्तक्म	2008	अज्ञात है

पहले कूत्तु में धार्मिक विषयों का प्रदर्शन किया जाता था, लेकिन आजकल कूत्तु के माध्यम से राजनीतिक सेवाएँ भी करायी जाती है। देश और प्रदेश के चुनाव पर अपने अपने राजनीतिक मत प्रकट करने के लिए कूत्तु की सहायता लेता है। परंतु इससे कूत्तु का स्वरूप प्रस्तुत नहीं है। अर्थात कूत्तु व्यक्ति का मनोरंजन आगे बढ़वा देने का विषय हो गया है। कारण ऐसे हुए भी ये सभी लक्ष्य की पूर्ति के लिए पुरी कथा के रूप से अनवरत कार्य कम्ब रामायण करता है। कम्ब रामायण इतना श्रीलंका के तमिल आम जन के साथ समीप हुआ है।

कम्ब रामायण केवल भारतीय प्रजा एवं कवियों के लिए प्रेरणा स्रोत नहीं रहा। उसकी वर्ण्य वस्तु से आकृष्ट होकर श्रीलंकाई तमिल कवि एवं कूत्तु आदि नाटककार अपनी पटकथाओं के निर्माण करते आ रहे है। तमिल भाषा के महान कवियों में कम्ब की गणना की जाती है। तमिल में रचित प्रथम रामचरित सम्बन्धी महाकाव्य कवि चक्रवर्ती कम्बन कृत रामायण ही माना जाता है। कमबन ने अपने रामायण ग्रन्थ को रामायण न कहके इरामावतारम् ही रखा है। जो कि आज 'कम्ब रामायण' नाम से प्रसिद्ध है। श्रीलंका का तमिल समाज के आम जन के बीच में भी कम्ब रामायण तमिल भाषा की अमर रचना समझी जाती है। वास्तव में इसमें तमिल भाषा के माधुर्य एवं काव्यसौन्दर्य की उच्चता का एकमात्र उदाहरण कवि चक्रवर्ती कम्बन का इहामावतारम् ही है। कवि कम्बन को 'कवि चक्रवर्ती की उपाधि संसार के हर तमिल जनता ने दी है। सम्भव है कि कम्बन अपने पूर्वकलिन शैव और वैष्णव सन्त की राम कथाओं से प्रभावित हुआ। श्रीलंका का तमिल जन भी कम्बन का उस प्रयत्न को आकर्षित हो गया। कम्बन की काव्यप्रतिभा उच्चकोटी है। उक्ति विन्यास एवं रचना शैली को नाटक के लिए अत्यन्त सुदर हो गया है। दक्षिण भारत की हर कलाकृति के लिए कम्बन का रामायण की विशिष्ठता का प्रभाव दिखा सकती है। वास्तव में तमिल साहित्य के इतिहास में कम्बन की इसी गरिमा के कारण नवम शतल से लेकर चौदहवीं शतक तक के बृहत् काव्य काल को कम्बन काल माना जाता है।

रामायण एवं राम कथा का मूल स्रोत वाल्मीकि रामायण है। संस्कृति से स्वच्छंद होकर रामायण की कथा प्रादेशिक भाषाओं में विकसित हुई। इन रामायणों में से कम्बन ने अनेक मौलिक परिवर्तन किये है। इसमें प्रत्युत पात्रों के चरित्र–चित्रण में पर्याप्त परिष्कार तथा काव्य के उद्देष्य की पूर्ति में पर्याप्त सहायता प्राप्त हुई है। घटनाओं का उपस्थान, प्राकृतिक दृश्यों का पात्रों के व्यापारों, सम्भाषण, चरित्र–चित्रण, प्रसंग वर्णन, परिस्थितियों में नाटकीय अनुक्रम तथा व्यक्तित्व के साथ उचित सामंजस्य, पात्रों के मनोभावों का कहीं तीव्र, कहीं मन्द गति से अभिव्यंजन, पात्र–व्यापारों के द्वारा जीवन–मूल्यों का उपयुक्त निर्देश तथा चिरन्तन सत्यों का सत्यानुकूल स्फुरणदृ ये सब कम्बन की मौलिक विशेषताएँ हैं। उनकी भाषा भावानुकूल तादात्मकता, ओज और प्रांजलता, शैली की विविधता और ध्वन्यात्मक अभिव्यक्तियाँ अद्भुत हैं। कम्ब रामायण की इन विषेशताएँ और भाशा कौशल्य नाटक केलिए अत्यन्त योग्य हुआ है। कूत्तु एक जन नाटक हुए भी इनकी वड़मोडी शैली का शास्त्रीय स्थल पर पहुँच जा रहा है। इस के लिए कम्ब रामायण के आश्रित पट–कथाओं के अनुग्रह अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गयी है। तमिल भाषा का ध्वनि–सौन्दर्य कम्ब ने अपने कृति इरामावतारम से एकत्रित करता है। इस प्रकार सुन्दर, मधुर तथा ध्वनि, सौन्दर्य

की भाशा कहीं में देख नहीं सकता। वास्तव में वालिमोच्चम् (1984) रावनन्तवम (2008) रावनेशन (2003) आदि कूत्तु पटकथाओं में कम्बन की मधुर भाषा शैली की अनुयायी देख सकता है। कूत्तु पट–कथाकार ने कम्ब रामायण के पद्यों की आकृति उसी प्रकार अपने पद्य–रूपी संवादों में प्रयोग किया है। इसमें ओज और प्रांजलता विद्यमान है। वास्तव में कम्ब रामायण की शैली की विविधता और ध्वन्यात्मक अभिवष्क्तियाँ अद्भुत हैं। यह कम्ब रामायण में सम्मिलित १२००० पद्यों में विद्यामान हैं। इन पद्यों में निहित ऐसा 'वृलम' नामक छंद की रचना होती है उसी प्रकार रचनाएँ प्रस्तुत करने के प्रयास कूत्तु का रामायण नाटकों मे यत्र–तत्र देख सकता है। कम्ब रामायण पढ़ना सुनना और सुनाना कूतुकार अन्नावियर के कर्तव्य हो गया है। अन्नावियर के स्थान ग्रहण करने के लिए विभिन्न कौशल्य की पूर्णता तक पहुँचना चाहिए। उसी दृष्टि में अन्नावियर का कम्ब रामायण का जानकारी महत्वपूर्ण है। इसलिए बॅटिकलोवा नामक जिले के अन्नवियर परम्पराओं में कम्ब रामायण के आधारित निर्माण हमेषा प्रस्तुत करना दिखा सकता है।

कूत्तु नाटक की रामकथा की पट–कथाओं में कम्ब रामायण की भाषा शैली, छन्द, योजना आदि के साथ साथ कम्ब का अवतारवाद का प्रयोग भी देखने को मिलता है। बॅटिकलोवा का वन्दरैमुल्ले गाँव में प्रदर्शित राम–सीता (2003) नामक नाटक इसके लिए उदाहरण के रूप से दिया सकता है। कम्ब भगवान के अवतारवाद का समर्थन करते हैं। उनके रामायण ग्रन्थ का नामकरण 'इरामावतारम' हुआ है। इससे भी स्पष्ट होता है कि कम्ब का अवतारवाद की प्रेरणाएँ। कूत्तु का रामायण नाटक से भी अवतार की महिमा समझाने के लिए प्रयास है तथा इससे जनता को भक्ति के द्वारा मुक्तिमार्ग का उपदेश देते हैं। कम्ब के राम उदारता की मूर्ति हैं। उन्होंने राम के शील गुणों को लगातार वर्णन किया गया है। हर कूत्तु नाटकों में राम–सीता दोनों को प्रमुख नहीं होता है। लेकिन राम–सीता लेकर कूत्तु नाटक में अवतारवाद आगे बढाया जाता है, वहाँ रामचन्द्र जी का धर्म, ज्ञान और तपश्चर्य के आगार प्रस्तुत किया जाता है। इससे उसका समुन्नत गुण एवं सहनशीलता दिखा देने के लिए प्रयास किया जाता है। सीता को लक्ष्मी के अवतार के रूप में दिखाया जाता है। वास्तव में राम सीता कूत्तु नाटक में विभीषण राम की करुणा पर विश्वास कर उनके पास जाकर उनके चरणों में प्रणाम करते हैं। इससे धर्म और सत्य की विजय अंकित किया जाता है। यह कम्ब रामायण का प्रभाव से हुआ है। रावनेशन एक ऐसा कूत्तु नाटक है यहाँ, नारायणावतार राम से युद्ध न करने का अनुरोध करते हुए विभीशण रावण को नृसिंहावतार की कथा सुनाता है। उस घटना कम्ब रामायण में मिलता है भारतीय अन्य रामकथा में ऐसा वर्णन नहीं मिलता। लेकिन श्रीलंका के कूत्तु के रामकथा के संबंधित नाटकों के प्रसंगों में मिलता है।

कम्ब रामायण का रावण अन्य रामकथाओं के रावण से अलग है। परंतु कम्ब का रावण का वर्णन श्रीलंका के कूत्तु नाटक में दिखा सकता है। कम्ब का रावण का पात्र नितान्त मौलिक है। सफल शासक, विद्या कलाओं में निष्णात, सुन्दर, सम्पन्न, शिव भक्त महावीर है। युद्ध कला का विशरद है तथा उसे अपनी प्रजा का आदर प्राप्त है। 'श्री रामर अंजरीयर युद्धम' (२००१) जैसे वडमोडी कूत्तु का एक स्थान में राम रावण को नमस्कार करने की दर्शन होता है। प्रत्येक पात्र की हृदयगत सुक्ष्म भावनाओं को पूरा–पूरा समझने की शक्ति कम्बन में है। उस प्रकार मानवीय

गुण कूत्तु नाटकों के रामायण पात्रों से भी दृष्टव्य है। हर राम कथाओं में रामचन्द्र जी, विष्णु का अवतार है परंतु साधारण मनुष्य माना है। युग धर्म के अनुसार राम ही ईश्वर का अवतार है। दृढ़विश्वास, चित्रवान, धीरज है परंतु सीताहरण के पश्चात् राम अपनी पत्नी का और राम शूर्पणखा की सुन्दरता देखकर कमाल हो जाता है। इस प्रकार मानवीय गुण कम्ब के तरह कूत्तु का पट कथाकार भी प्रस्तुत किया जाता है। ताडका को दुष्टा होने पर भी वह अपनी पति और बच्चे के लिए प्यारी पत्नी और माँ है। कूत्तु नाटक की सीता भी कम्ब रामायण की सीता की तरह एक आदर्श सहधर्मिणी की सुख– दुःख में सर्वदा पति के साथ रहने वाली के रूप में मिलती है। लेकिन वह सदैव साधारण पत्नी का गुण प्रस्तुत की जाती है। कम्बन की शूर्पणखा अति सुन्दर अत्यधिक चतुर मायावी तथा कूटनीतिज्ञ है। परंतु वह राम के सौन्दर्य को देखकर कामदेव के भ्रम में भ्रमित होने लगती है। शूर्पणखा नाना प्रकार के तर्क–कुर्तक द्वारा अपनी बात को न्यायसंगत सिद्ध करने का प्रयास करती है। शूर्पणखा का उस प्रकार चरित्र चित्रण कम्ब रामायण ही मिलता है। उस प्रभाव पर कूत्तु की हर पट–कथाओं की शूर्पणखा भी अनुपम, अनिन्द्य सौन्दर्य से युक्त नशीली नारी की तरह चित्रित है। यह कम्ब रामायण की शूर्पणखा से मैल खाती है।

ऊपर लिखित हर रामकथा से संबंधित कूत्तु नाटक में राम रावण युद्ध होता है। लेकिन इनमें युद्ध की वीरता घौण रहता है। युद्ध की पटुता दिखाता है। मानव का अहंकार, परपीड़ा आदि पर उपहास किया जाता है। जब रावण युद्ध भूमि में निःशस्त्र हो जाता है तब राम उसको मारना नहीं चाहते तो इसपर श्री राम की महानता को कम्बन यहाँ सुन्दर ढंग से दर्षाते हैं। कम्बन का राम रावण से कहते हैं कि 'इन्डु पॉय नालैवा।' राम चहते तो उसे मार सकते थे। युद्ध वीर का लक्षण है कि निःशस्त्र पर हथियार नहीं चलाना इसलिए राम उसे कहते हैं कि 'आज तुम चले जाओ, कल युद्ध के लिए आना।' इस वर्णन में मर्यादापुरुषोत्तम राम हमारे लिए आदर्श बन जाते हैं। यह शत्रु के प्रति भी श्री राम के क्षमा गुण का परिचायक है। उस घटना इस प्रकार ही कूत्तु नाटक में भी दिखा सकता है।

कूत्तु नाटक में मन्दोदरी का पात्र का निरूपण कम्ब रामायण के समान है। वह मयदानव की पुत्री, राम के प्रमुख प्रतिनायक रावण की पत्नी, परमवीर इन्द्रजीत की माता है। कूत्तु नाटक में वह श्रेष्ठ परिपरायणा एवं कर्तव्यपरायण होने के कारण वह अपने पति को विनती कर रही थी कि, निष्फल युद्ध छोड़कर राम से शत्रुता त्याग करने के लिए हर कूत्तु में भी रावण का वध के बाद मन्दोदरी का विलाप प्रस्तुत किया जाता है। इन पद्यों में उसकी हृदयगत पति–भक्ति विद्यामान किया जाता है। कूत्तु पद्यों में मन्दोदरी लक्ष्मीनारायण का अवतार की तरह माना गया है। वास्तव में कम्ब का मन्दोदरी का चरित्र चित्रण में वह अतीव रूपवती है, पतिपरायणा है, पुत्रवत्सला, कर्तव्य परायणा और नीतिज्ञा है। कूत्तु पट कथाकार भी अपने नाटकों में मंदोदरी उस प्रकार गुण से प्रस्तुत करने के लिए प्रयास किया जाता है।

श्रीलंका की रामकथा के कूत्तु नाटक का अध्यापक कम्ब रामायण कहना विवादजनक विषय नहीं ही है। कम्ब रामायण में कम्ब ने कैसी सिद्धि का वर्णन किया है इस प्रकार कूत्तुकार अपनी पट–कथाओं की सिद्धि नर्मिण करने के लिए प्रयास कर रहा है। कम्ब रामायण में चित्रित

पात्र, कम्बन की काव्य का कला–पक्ष अवतारवाद, कम्ब का काव्य लक्षण–समरस भाव, काव्यानन्द भक्ति का वर्णन को अपनी पट–कथाओं में अपनी जानकारी पर रचना करने के लिए मन करता है। कम्ब रामायण की गहरी एवं मधुर भाशा की रसज्ञता ग्रहरण करने की षक्ति ग्राम्य कूत्तु पट कथकार को नहीं है। परंतु उसका प्रयास श्रेष्ठ है। वास्तव में लोक नाटक की पट कथा इतना सुन्दर ढंग से लिखने के लिए कम्ब रामायण का मधुर साहित्यकरण प्रेरणा हो गया है।

संदर्भ ग्रंथ

1- अग्रवाल रामेश्वरदयालू, *कम्ब रामायण और रामचरितमानस,* कल्पना प्रकाशन, मेरठ, 1973

2- अवस्थी इन्दुजा, *रामलीला : परंपरा और शैलियाँ,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979-

3- उपाध्याय कृष्णदेव, *लोक की भूमिका,* इलाहाबाद, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहबाद, 2014

4- पाण्डेय देवी प्रसाद, *महावीर श्री हनुमान जी,* 2012

5- मिश्र शिवकुमार, *भक्ति काल,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2015

6- सं.शेशन् रम, *भारतीय भाषाओं में रामकथा* (तमिल भाषा) साक्षी अंक २२, अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या.

7- सं. प्रताप सिंह योगेन्द्र, साक्षी अंक 48– (अयोध्या शोध संस्थान की अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या)

Sinhala Books:

1. Wisakes, Chandrasekaram, Wadamodi, Sadakada Prakashana, 2001.
2. Ellawala, Hema, Puratana Sri Lankawe Samaja Itihasaya, Lankandawe Mudranalaya, Colombo, 1968.
3. Eliyat, C, Hindu Samaya ha bahusamaya Part I, Lankanduwe Mudranalaya, Colombo, 1992.
4. Gunawardana, V.W., Madakalapu Distrikkaye Wruthantaya, Visidunu Prakashana, Boralesgamuwa, 2008.
5. Ed. Gunawardana W.F., Paravi Sandeshaya, M.D. Gunasena Publisher, Colombo, 1949.
6. Hettige, Devani V.U., Shri Lankawe Prathama Muni Ishwara Pedima devala Aasrita vivida Sanniwedana pravanatha saha Samaja sanvidana, Godage publisher, Colombo, 2016.
7. Kiriti Vimala, hittadiye Udita / Bharatiya Dharma Shastra Saha Sinhala Sirit Virit, Godage Publisher, Colombo, 1981.
8. Merendo A. H., Sinhalayange Mularambaya, M.D. Gunasena Publisher, Colombo, 1993.
9. Ranasingha Saman Chandra, Ram Saha Bodisatwa, 2007.
10. Paranavitana, Senerat, Sinhalayo, Visidunu Prakashana, Colombo, 1998.
11. Ariyaratna Sunil, Demala Ramayanaya, Godage Publisher, Colombo, 2008

English Books :

1. Bonnie Wade C, Classical Indian Dance in Literature and the Arts, Sangeet Natak Akademi, New Delhi, 1968.
2. Base Mandakranta, The Ramayana Revisited, Oxford University Press, New York, 2004.
3. Hera Lal, Cultural and Heritage of India Vol-I, University of Prayag, Prayag.
4. Jnan R., The Ramayana in Philipines, Coronso Publications, Philipines, 2008.
5. Paramasiva T. Aiyer, Ramayan and Lanka Part I, Bangalore Press, Bangalore, 1940.
6. Winternitz M, History of Indian Literature – Vol I, University of Calcutta, Calcutta, 1927.
7. Nagoda, Ariyadasa Senevirathna, Sri Lanka Ravana Capital and Pre-History of Sigiri, Sammaditthi Publication, Colombo, 2003.
8. Adikaram E.W., Early History of Buddhism in Ceylon, Sri Lanka, Widayasilasa Mudranalaya, 1946.